नाइजीरिया में बोको हरम का लगातार आतंकी अभियान: कोई आक्रोश क्यों नहीं?

डॉ. निवेदिता रॉय *

नाइजीरिया में आतंकवादी समूह/गुट बोको हरम ने जनवरी के प्रथम सप्ताह में नाइजीरिया के उत्तरी-पूर्वी शहर बागा और पड़ोसी गांवों में अब तक के अपने सबसे घातक हमलों की शुरुआत की। 3 जनवरी, 2015 को प्रारंभ हुए ये हमले सप्ताह भर तक जारी रहे। स्थानीय अधिकारियों ने कथित तौर पर कहा कि छह दिन के इस कोहराम के दौरान बोको हरम आतंकवादियों द्वारा किया गया यह मानवीय नरसंहार बड़ा भयावह था। हजारों नागरिक मारे गए, सैकड़ों घरों को जला दिया गया और सड़कों पर शव बिखरे पड़े थे। 'एमनेस्टी-इंटरनेशनल' ने कहा कि यह बोको हरम का अपने विद्रोह के छह साल में सबसे कट्टर नरसंहार है। बाद के हमलों में और अधिक लोग मारे गए, जिनमें कम से कम 19 लोग माइदुगुरि के राजधानी शहर बोर्नो में तब मारे गए, जब एक 10 वर्षीय लड़की को बम विस्फोट करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। ये आतंकी हत्याएँ अंतरराष्ट्रीय मीडिया में शायद ही कहीं सुर्खियां बनीं, जबकि पेरिस आतंकी हमला, जो उसी सप्ताह हुआ और जिसमें 17 लोग मारे गए थे, पर दुनिया भर से प्रतिक्रियाएँ आईं।

इस्लामी उग्रवाद के नाम पर किए गए इन दोनों हमलों पर वैश्विक प्रतिक्रियाओं में ऐसी असमानता अलग-अलग क्षेत्र, जाति और धर्म के लोगों के जीवन के लिए लगाए गए अलग-अलग मूल्यों के अलग पैमाने की अभिव्यक्त करता है। गैर-पश्चिमी देशों, विशेषकर नाइजीरिया जैसे अफ्रीकी देशों में हुई जघन्य आतंकी कार्रवाई को भी अंतरराष्ट्रीय मीडिया द्वारा तब तक अधिक प्राथमिकता नहीं दी जाती है, जब तक कि वे स्वतंत्रता, महिलाओं, सभ्यता अथवा पश्चिम के लोगों पर हमले जैसे किसी निश्चित एजेंडे

की पूर्ति नहीं करते। नाइजीरिया के मामले में, बोको हरम द्वारा बार-बार किए जाने वाले आतंकी हमलों को रोजमर्रा की बातों की तरह माना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो लोग रोज-रोज की हिंसा के प्रति असंवेदनशील बन चुके हैं। हो सकता है कि हिंसा की सामान्य प्रकृति के कारण पश्चिमी मीडिया इन्हें समाचारयोग्य नहीं मानता और इसलिए, इसे नजरअंदाज कर दिया करता है। फिर भी, नाइजीरिया में ऐसी निर्मम आतंकी हत्याओं की अनदेखी के लिए केवल वैश्विक मीडिया और अंतरराष्ट्रीय समुदाय पर ही दोष नहीं मढ़ा जा सकता।

आक्रोश की यह असमानता सरकारों द्वारा ऐसी स्थिति में प्रतिक्रिया व्यक्त करने के तरीके से भी संबधित है। फ्रांस के विपरीत, नाइजीरिया के राजनीतिक नेताओं ने शायद ही कभी बोको हरम द्वारा की जाने वाली इन अविवेकपूर्ण हत्याओं के बारे में वक्तव्य दिया हो। जहां जोनाथन गुडलक ने चार्ली हेबडो पर हुए हमले की निंदा करते हुए एक वक्तव्य जारी किया और फ्रांस के लोगों के साथ "एकजुटता" दिखलाई वहीं वे अपने ही देश में लोगों के मारे जाने पर ऐसा करने में विफल रहे। यहां तक कि अफ्रीकी नेताओं ने भी पेरिस के साथ सहानुभूति प्रकट करते समय नाइजीरिया में आतंक के शिकार लोगों के लिए ज्यादा चिंता व्यक्त नहीं की।

यह समझा जा सकता है कि राष्ट्रपति जोनाथन ऐसे समय में बोको हरम के बारे में चर्चा करना पसंद नहीं करेंगें जब वे अगले महीने अपने फिर से चुने जाने के लिए चुनाव प्रचार कर रहे हैं। लेकिन यह पहली बार नहीं है जब जोनाथन ने बोको हरम के हमलों पर चुप्पी साध ली है। जब बोको हरम आतंकवादियों ने अप्रैल 2014 में चिबोक के उत्तरी-पूर्वी गांव में 200 से अधिक स्कूली लड़कियों को अगवा कर लिया था तब राष्ट्रपति जोनाथन ने लगभग तीन सप्ताह तक कोई सार्वजनिक टिप्पणी नहीं की। उन्होंने इसके बारे में चुप रहना बेहतर समझा, क्योंकि इस स्तर की हिंसा पर उनकी अभिस्वीकृति एक राष्ट्रपति के रूप में अपनी विफलता मान लेना समझा जाएगा।

वर्तमान में, बोको हरम का खतरा नाइजीरिया के राजनीतिक संदर्भ के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह देश 14 फरवरी को होने वाले आम चुनाव की ओर बढ़ रहा है, जहाँ राष्ट्रपति पद की दौड़ सत्तासीन राष्ट्रपति, गुडलक जोनाथन और पूर्व सैनिक शासक, मोहम्मद बुहारी के बीच है। विश्लेषकों का कहना है कि बोको हरम, जो लोकतांत्रिक राजनीति को अस्वीकार करता है, लोगों को धमकाने और मतदान से विमुख करने के लिए अपने हमले बढ़ा सकता है।

वर्ष 2010 में राष्ट्रपति का पद संभालने के बाद से जोनाथन गुडलक ने बोको हरम को नियंत्रित

करने के लिए पर्याप्त कार्रवाई नहीं की है, जो उत्तरी नाइजीरिया में इस्लामी खिलाफत/खलीफा की स्थापना करना चाहता है। सुरक्षा की स्थिति बहुत जटिल हो गई है और अब तक किए गए बल प्रयोग से वांछित परिणाम सामने नहीं आए हैं। आतंकी समूह को नियंत्रित करने में उनकी विफलता के लिए कई कारक उत्तरदायी हैं जिनमें उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र की राजनीतिक और आर्थिक उपेक्षा, भ्रष्टाचार, शिक्षा का अभाव, बेरोजगारी, सुरक्षा बलों द्वारा मानवाधिकारों का हनन और सबसे महत्वपूर्ण कारक, विदेशी उग्रवादी समूहों जैसे, इस्लामी मग़रेब में अल कायदा (एक्यूआइएम) के साथ बोको हरम के संबंध शामिल हैं।

विगत वर्षों में, बोको हरम ने नाइजीरिया के खिलाफ युद्ध में लगातार कामयाबी हासिल की है। यह विषम/घातक हमलों से आगे बढ़कर परिष्कृत सैन्य आपरेशन चलाने लगा है, जिसके परिणामस्वरूप उत्तरी-पूर्वी नाइजीरिया में एक बड़े भू-भाग पर इसका नियंत्रण हो गया है। न केवल विदेशी अतिवादी/उग्रवादी समूहों के साथ संबंध बना कर, बल्कि पड़ोसी देशों, जैसेकि कैमरून, नाइजर और चाड तक अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करके इसने एक क्षेत्रीय स्वरुप भी प्राप्त कर लिया है, जो संभवतः इराक और सीरिया में इस्लामी उग्रवादियों द्वारा इसी तरह की कार्रवाई से प्रेरित है। ऐसी आशंका है कि अगर इन को अनियंत्रित छोड़ दिया गया तो इन हमलों का दायरा बढ़ता जाएगा।

बोको हरम की समस्या की गंभीरता को देखते हुए, नाइजीरियाई सरकार अब केवल सैन्य समाधान तक ही सीमित नहीं रह सकती है। बुहारी या जोनाथन, जो भी चुनाव के बाद सत्ता में आते हैं, उन्हें कट्टरता के मूल कारणों सहित इस मुद्दे की सभी जटिलताओं को तत्काल सुलझाना होगा। अब और विलंब न केवल इस देश के लिए बल्कि इस क्षेत्र के लिए भी भयावह हो सकता है।

इस समस्या को क्षेत्रीय स्तर पर भी सुलझाने की आवश्यकता है। अब तक, अफ्रीकी संघ, इकोवास और क्षेत्रीय नेताओं ने नाइजीरिया में फैल रही त्रासदियों की उपेक्षा की है। चूंकि अब यह समस्या नाइजीरिया के घरेलू क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रह गई है, इसलिए क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं/नेताओं को अग्रणी भूमिका अदा करने और इस्लामी आतंक के विरूद्ध नाइजीरियाई अधिकारियों के साथ मिलकर समन्वित प्रयास करने की जरूरत है। "अफ्रीकी समस्याओं के लिए अफ्रीकी समाधान" के सिद्धांत के अनुरूप अफ्रीकी संघ और इकोवास के तत्वावधान में यह एक प्रभावी आतंक-विरोधी प्रतिक्रिया तंत्र के निर्माण हेतु आग्रह का आह्वान करता है।

यद्यपि, नाइजीरिया और इसके आस-पास के क्षेत्रों में बोको हरम के आतंक की चुनौती का सामना

करना नाइजीरिया और अफ्रीका की प्राथमिक जिम्मेदारी है, तथापि, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को भी इस बढ़ते खतरे से निपटने में मदद करने के अपने दायित्वों से विमुक्त नहीं होना चाहिए। इस्लामी उग्रवाद के विरूद्ध इस संघर्ष में, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को अफ्रीकी धरती पर हो रहे आतंकी हमलों से भी तात्कालिकता की समान भावना से निपटना चाहिए।

आतंकवाद के शिकार राष्ट्र के रूप में अपनी ओर से भारत को भी बोको हरम के बढ़ते अत्याचारों के बारे में अपनी चिंताओं को खुलकर व्यक्त करने की जरूरत है। नाइजीरिया भारत के लिए एक महत्वपूर्ण देश है क्योंकि यह भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है और भारतीय निर्यातों के लिए अफ्रीका में सबसे बड़ा बाजार है। यहाँ बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय के लोग रहते हैं। हाल के वर्षों में, भारत की ऊर्जा सुरक्षा जरूरतों के लिए यह देश अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि भारत नाइजीरिया से अपने लिए आवश्यक कच्चे तेल का लगभग 8-12 प्रतिशत आयात करता है। नाइजीरिया द्वारा सामना की जा रही सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए, भारत अफ्रीका में प्रस्तावित बहुपक्षीय और क्षेत्रीय आतंकवाद-विरोधी पहल में भागीदार बनने का प्रयास कर सकता है।

****

डॉ निवेदिता रॉय विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।